Name - Geetanjali Chauhan

Course - B.A. Sanskrit (Hons)

Roll no - SKT/1/18

Paper - Sanskrit Meters and Music

Part IInd - Semester IV (CBCS)

Paper code :- 12133905

Course Code - 529

Phone number - 9917057541

Scanned with CamScanner

Q-1 नाद

(अथ द्वितीयं पिण्डोत्पत्तिप्रकरणम्)

(नादस्य प्रशंसा)

गीतं नादात्मकं वाद्यं नादव्यक्त्या प्रशस्यते ।
तद्द्वयानुगतं नृत्यं नादाधीनमतस्त्रयम् ॥

अर्थात - गीत नादात्मक है। वाद्य नाद की अभिव्यक्ति के कारण प्रशंसित होता है। नृत्त उन दोनों का अनुगत है। इसलिए तीनों (गीत, वाद्य और नृत्त) नाद के आधीन है।

नादेन व्यज्यते वर्णः, वर्णात्पदात् वचः ।
वचसो व्यवहारोऽयं नादाधीनमतो जगत् ॥

अर्थात नाद से वर्ण, वर्ण से पद, पद से वाक्य व्यक्त होता है। वाक्य से यह व्यवहार होता है। इसलिए जगत नाद के आधीन है।

नाद के प्रकार

आहतोऽनाहतश्चेति द्विधा नादो निगद्यते ।
सोऽयं प्रकाशते पिण्डे तस्मात्पिण्डोऽभिधीयते ॥

अर्थात आहत और अनाहत नाद दो प्रकार से कहा जाता है। वह यह (नाद) शरीर में प्रकाशित होता है। अर्थात कहता हूँ।

संगीतसंबंधी ग्रन्थों में सामान्यतः शरीर के निरूपण की परम्परा नहीं रही है। लेकिन शार्ङ्गदेव आयुर्वेद के ज्ञाता और न केवल वैद्याकियाँ करते थे। बल्कि उन्होंने आयुर्विज्ञान संबंधी ग्रन्थ की रचना भी की थी, जैसा की उन्होंने स्वयं इसी प्रकरण में (श्लोक ॥९ में) कहा है। प्रस्तुत प्रकरण में ग्रन्थकार ने वेदान्त और

आयुर्वेद के आधार पर गर्भ में जीव के प्रवेश से लेकर हर महीने भ्रूण में होने वाले परिवर्तन, विकास आवश्यकता और विशेषताओं के अनुसार शरीर की रचनाकार संक्षिप्त लेकिन पूर्ण निरूपण किया है।

नादस्य पञ्चविधत्वम्
(नाद की पंचविधता)

नादोऽतिसूक्ष्मः सूक्ष्मश्च पुष्टोऽपुष्टश्च कृत्रिमः।
इति पञ्चविधा धत्ते पञ्चस्थानस्थित क्रमात् ॥

अर्थात क्रम से पाँच स्थानों में स्थित नाद अतिसूक्ष्म और सूक्ष्म पुष्ट और अपुष्ट तथा कृत्रिम इस प्रकार पाँच संज्ञाए धारण करता है। इस श्लोक के सन्दर्भ में दो बाते उल्लेखनीय है। एक तो नाद के पाँच भेदो का क्रम और दूसरे इनकी संज्ञाए। अति सूक्ष्म के बाद सूक्ष्म रखा गया है।

'नाद' शब्द को निरुक्ति (नादशक्ति)

नकारं प्राणनामानं दकारमनलं विदुः।
जातः प्राणाग्निसंयोगात्तेन नादोऽभिधीयते ॥

अर्थात न प्रेरणा नामक (वायु) को (तथा) द से अग्नि को जाना जाता है। प्राण अग्नि के संयोग से उत्पन्न हुआ इसलिए नाद को अभिधीयते संज्ञा दी जाती है।

निष्कर्ष :- तन्त्रशास्त्र के अनुसार यहाँ 'नाद' शब्द की निरुक्ति बताई गई है। जिस प्रकार बीजाक्षर से उनके देवताओ के रूप की प्राप्ति है। उसी तरह यहाँ भी 'न' और 'द' को प्राण और अग्नि रूप मान कर इन दोनो में संयोग से उत्पन्न होने के कारण नाद कहाँ जाता है। सिंह ने 'न' और 'द' अक्षरों से उत्पन्न होने के कारण अप्रत्यय अर्थ में 'अण' प्रत्यय लगा।

कर 'नादः' शब्द दिया गया है। तीसरा नाद स्थान श्रुति स्वर जाति कुल देवता ऋषि - छन्द रस प्रकरण 'विंदु' क्रिया पद से व्यंजित है कि आज इसे जानते है। नाद व्यक्त होने से पहले अव्यक्त रूप में भीतर तो रहता है। लेकिन अभिव्यक्त अथवा उत्पन्न तभी होता है। जब प्राण और अग्नि का संयोग होता है।

Scanned with CamScanner

Q-2 गति :- पद्य के पाद में जो बहाव होता है। उसे गति कहते हैं। छन्दोबद्ध रचना को लय में आरोह अवरोह के साथ पढा जाता है। छन्द की इसी लय को गति कहते हैं।

Q-3 यति या विराम :- आचार्य पिङ्गल ने छन्दा सूत्र में यति का विधान किया है। श्लोक उच्चारण के समय जीवा जहाँ अपनी इच्छा से रुक जाती है। उसे यति कहते हैं। पद्य या श्लोक को पढने में आवश्यकता अनुसार कुछ अक्षरों के बाद अल्प विराम होता है। इसी अल्पविराम को गद्य में विराम और पद्य में यति कहते हैं। यति शब्द का अर्थ अनेक विद्वानों ने भिन्न-२ किया है। कुछ विद्वान उसे विरति विश्राम विराम विच्छेद आदि भी कहते हैं।

Q-4 मूर्च्छना :- 'मूर्च्छना' शब्द की व्युत्पत्ति मतंग के अनुसार मूर्छ धातु से है। जिसके अर्थ है - मोह और समुच्छाये (व्याप्त) होना वृद्धि कल्लि० ने मूर्च्छ धातु से निष्पन्न होता है। इन धातुओं में विकल्प से 'च' कार होने पर मूर्च्छना और न बनता है। कल्लि० के अनुसार धातु को मोहार्थक मानने पर मूर्च्छना का अर्थ है। जिनके द्वारा श्रोता मोहित होते है और समुच्छ्राय अर्थ का ग्रहण करने पर अर्थ का ग्रहण करने पर अर्थ है, जिसके द्वारा राग व्याप्त होते है, अर्थात उभरते है। सिंह ने यह स्पष्ट किया है कि मूर्च्छना के उभरते लक्षण में स्वर का आरोह और अवरोह क्रम ही विवक्षित है, आरोह और अवरोहरूप क्रिया नही है। उसे मूर्च्छना कहते है।

Scanned with CamScanner

Q-5 गणात्मक :- (1) समवृत्त :- जिस पद्य के चारो चरणों में अक्षर या वर्ण की संख्या समान है जैसे उपेन्द्रवज्रा समवृत्त छन्द है। क्योंकि इसके चारो चरणों अक्षर संख्या समान है। सभी में ।।-।। अक्षर होते है।

जैसे :- उपेन्द्रवज्रा

(2) विषमवृत्त :- जिस छन्द के चारो चरणों में वर्णों स्वरों की भिन्न-भिन्न हो वह विषमवृत्त कहलाता है।

जैसे :- गाथा, उद्गाथा और उद्गाथा

उनगणात्मक (1) समवृत्त :- जिस पद के चारो चरणों में अक्षर या वर्ण संख्या समान हो एक ही लक्षण से समवृत्त कहते है। युक्त हो जैसे उपेन्द्रवज्रा

(2) विषमवृत्त :- जिस छन्द के चारो चरणों में वर्णों और स्वरो की संख्या तथा लक्षण भिन्न भिन्न हो विषमवृत्त कहलाते है।

जैसे उद्गाथा, गाथा।

Scanned with CamScanner

मालिन छन्द का लक्षण व उदाहरण

मालिनी नौ म यौ य ।

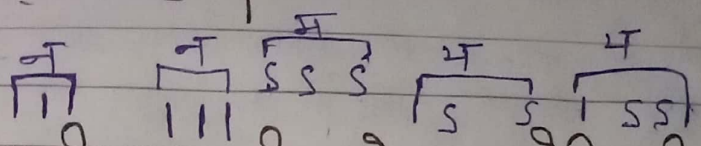

न न म य य
||| ||| SSS ISS ISS

उदाहरण :- जयति जलदनीलः केशवः केशिघाती । 15
जयति जन दृष्टि चन्द्रमाश्चन्द्रगुप्तः ॥ 15
प्रतिहतपरपक्षा आर्यचाणक्यनीतिः । 15
जयति जयनकार्य यावत्कृता चसवा ॥ 15

60

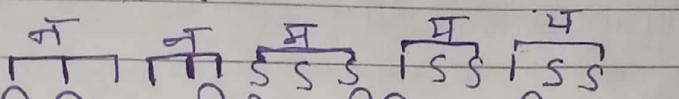

न न म य य
||| ||| SSS ISS ISS

विधिसमयनियोगा दीप्तिसंहारजिह्म । 15

शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ ॥ 15

रिपुतिमिरमुदस्योयमानं दिनानौ । 15

दिनकृतामिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूसः ॥ 15

60

अनुष्टुप छन्द का लक्षण व उदाहरण

उदाहरण :- श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं ।
सर्वत्र लघु पञ्चमम् :
द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं :
सप्तम दीर्घमन्ययोः ।

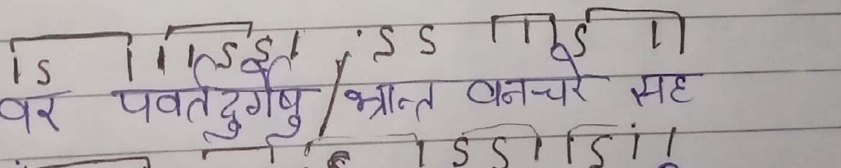

IS ||SSI ISS ||SI

उदाहरण:- वर पर्वतदुर्गेषु / भ्रान्त वनचरे सह

IS ||SS ISS ISI

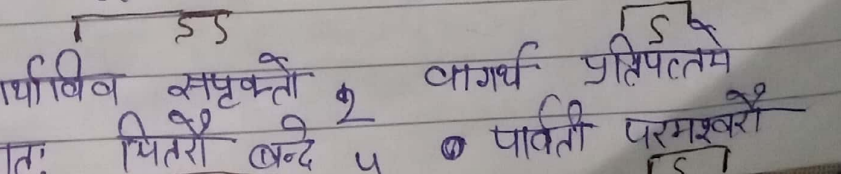

न मूर्ख जनसम्पर्क / सुरेन्द्रभवनष्वपि ।

I SS S

वागर्थाविव सम्पृक्तौ 2 वागर्थ प्रतिपत्तये

1
3 जगतः पितरौ वन्दे 4 पार्वती परमेश्वरौ

IS S IS